प्रश्नोत्तर न०-3

प्रश्न - बौद्ध दर्शन के प्रतीत्य समुत्पाद की व्याख्या कीजिए।

उत्तर - प्रतीत्यसमुत्पाद -

यह महात्मा बुद्ध के उपदेशों का आधारभूत सिद्धान्त है। यह बौद्ध दर्शन का केन्द्रीय सिद्धान्त है। पालि भाषा में इस सिद्धान्त को पटिच्चसमुत्पाद कहते हैं। प्रतीत्य समुत्पाद दो शब्दों से मिलकर बना है - 'प्रतीत्य' और 'समुत्पाद'। 'प्रतीत्य' का अर्थ है - 'किसी वस्तु के उपस्थित होने पर'। 'समुत्पाद' का अर्थ है - 'किसी अन्य वस्तु की उत्पत्ति'। इस प्रकार 'प्रतीत्य समुत्पाद' का अर्थ है - कारण की अपेक्षा रखकर या कारण पर निर्भर रहकर कार्य की उत्पत्ति अर्थात किसी वस्तु के उपस्थित होने पर किसी अन्य वस्तु की उत्पत्ति ! "हेतु प्रत्ययापेक्षो भावानामुत्पादः प्रतीत्यसमुत्पादार्थः॥"

प्रतीत्य समुत्पाद बौद्ध दर्शन का कारण-कार्य सम्बन्धी सिद्धान्त है जिसके अनुसार, कारण के उपस्थित होने पर कार्य की उत्पत्ति होती है। प्रतीत्यसमुत्पाद का उल्लेख बौद्ध दर्शन में वर्णित द्वितीय आर्य सत्य में है। द्वितीय आर्य सत्य में दुःख-समुदय या दुःख के कारण पर विचार किया गया है।

प्रतीत्यसमुत्पाद से संबंधित व्याख्याएं -

सापेक्ष रूप में प्रतीत्य-समुत्पाद कार्यकारणवाद है जिसके अनुसार कारण के होने पर कार्य होता है" (अस्मिन (कारणे) सति, इदं कार्यं भवति)", बुद्ध ने इसके माध्यम से यादृच्छिकतावाद और अलौकिक-कारणवाद का खण्डन किया है।

पारमार्थिक दृष्टि से प्रतीत्य समुत्पाद प्रपञ्चों का शमन करने वाला 'धर्म' या निर्वाण / बोधि है।

प्रतीत्यसमुत्पाद मध्यमा प्रतिपद है जो शाश्वतवाद और उच्छेदवाद

के मध्यम-मार्ग को स्वीकार करता है। शाश्वतवाद के अनुसार कुछ वस्तुएँ नित्य हैं। उच्छेदवाद के अनुसार, वस्तुओं के नष्ट होने पर कुछ भी शेष नहीं रहता। बुद्ध का मानना है कि वस्तुओं का अस्तित्व तो है किन्तु वे नित्य नहीं हैं उनका विनाश भी है किन्तु वह पूर्ण विनाश नहीं है।

कारणतामूलक व्याख्या -

प्रतीत्यसमुत्पाद की कारणतामूलक व्याख्या का उद्देश्य जगत् में विद्यमान दुःखों के मूल कारण की खोज करना है। यह खोज 'द्वादश निदान या द्वादश अंग के माध्यम से की गयी है। इसे 'भव चक्र', 'संसार चक्र', 'जन्म-मरण चक्र' तथा 'धर्म चक्र' भी कहा जाता है। इस चक्र का विश्लेषण अनुलोम और प्रतिलोम दोनों पद्धतियों के माध्यम से किया जा सकता है। दुःख के कारण के दो बिन्दु हैं- अनुलोम पद्धति में कारण से कार्य की ओर बढ़ा जाता है जबकि प्रतिलोम पद्धति में कार्य से कारण की ओर बढ़ा जाता है।

इस चक्र का प्रथम अंग है-

① **अविद्या** इस चक्र का मूल कारण है। अविद्या अनादि है। अविद्या का अर्थ है ज्ञान का अभाव। अवास्तविक वस्तुओं को वास्तविक समझना तथा दुःखात्मक को सुखात्मक समझना अविद्या का कार्य है।

② **संस्कार** - अविद्या से संस्कार उत्पन्न होता है। संस्कार का अर्थ है संस्कारों के रूप में संचित कर्म।

③ **विज्ञान** - संस्कार से विज्ञान उत्पन्न होता है।

④ **नामरूप** - विज्ञान से नामरूप उत्पन्न होता है। विज्ञान से अनुप्राणित मनो-भौतिक शरीर।

⑤ **षडायतन** - नामरूप से षडायतन उत्पन्न होता है। इसमें 5 बाह्य इन्द्रियां तथा एक आन्तरिक या मन इंद्रिय है।

6. **स्पर्श** - षडायतन से स्पर्श उत्पन्न होता है। इन्द्रिय का विषय से सम्पर्क।

7. **वेदना** - स्पर्श से वेदना की उत्पत्ति होती है। इन्द्रिय संवेदन

वेदना है। वेदना के 3 रूप - सुखात्मक, दुखात्मक, उदासीन।

8. **तृष्णा** – वेदना से तृष्णा उत्पन्न होता है। विषयों के भोग की तीव्र वासना तृष्णा है।

9. **उपादान** – तृष्णा से उपादान उत्पन्न होता है। विषय सुख में उत्पन्न आसक्ति।

10. **भव** – उपादान से भव की उत्पत्ति होती है, जन्म ग्रहण करने की प्रवृत्ति।

11. **जाति** – भव से जाति उत्पन्न होती है, जाति से आशय पुनर्जन्म है।

12. **जरा - मरण** – जरा-मरण की उत्पत्ति का कारण जाति है, यह समस्त दुःखों का प्रतीक है।

द्वादश अंग चक्र को द्वादश निदान भी कहते हैं क्योंकि प्रत्येक कड़ी एक कारण का निदान है। अविद्या या अज्ञान इसका अर्थात दुःखों का मूल कारण है।

प्रतीत्य समुत्पाद के द्वादश अंग चक्र का सम्बन्ध भूत, वर्तमान, भविष्य तीनों कालों से है। 3 उदाहरण –

अविद्या, संस्कार — पूर्व जन्म / भूतकाल

जाति, जरा-मरण — भविष्य काल

विज्ञान, नामरूप, षडायतन, स्पर्श, वेदना, तृष्णा, उपादान, भव — वर्तमान काल

प्रतीत्य समुत्पाद से स्थापित अन्य सिद्धान्त –

1. कर्मवाद
2. अनित्यवाद
3. अनात्मवाद
4. अर्थक्रियाकारित्व की अवधारणा

बौद्ध सम्प्रदाय में प्रतीत्यसमुत्पाद की व्याख्याएँ -

माध्यमिक शून्यवाद के अनुसार प्रतीत्यसमुत्पाद व्यावहारिक स्तर पर तो सत्य है लेकिन पारमार्थिक रूप में अस्वीकार्य है, इसमें प्रतीत्यसमुत्पाद अजातिवाद में परिणत हो जाता है।

योगाचार विज्ञानवाद में प्रतीत्यसमुत्पाद गति का पर्याय बना।

सर्वास्तिवाद (सौत्रांतिक तथा वैभाषिक) प्रतीत्यसमुत्पाद का अर्थ वास्तविक कारण-कार्यवाद के अर्थ में करता है।

आलोचना -

1. प्रतीत्यसमुत्पाद में कारणों की खोज की प्रक्रिया को अविद्या पर आकर रोक दिया गया।

2. प्रतीत्यसमुत्पाद उपनिषदों में वर्णित ब्रह्मचक्र की नकल होने के कारण मौलिक सिद्धान्त नहीं माना जा सकता।